लोकतंत्र का विमर्शकार

रजनी कोठारी

स्मृतिशेष

विजय प्रताप

रजनी कोठारी का बौद्धिक योगदान अद्वितीय है और फिलहाल भारतीय राजनीति शास्त्र के क्षितिज पर आज भी वह ही सबसे तेज चमकते हुए सितारे की भांति नजर आते हैं। उनके बारे में हर टिप्पणी अधूरी है जो सामयिक राजनीति में उनके प्रत्यक्ष योगदान को दर्ज नहीं करती। रजनी कोठारी के उदाहरण से स्वंयसिद्ध है कि कलम का इस्तेमाल किसी बौद्धिक पीठ की स्थापना भर के लिए नहीं, बल्कि राजनीतिक हस्तक्षेप के लिए भी किया जा सकता है।

चीन के साथ 1962 में हुए सीमा संघर्ष से पहले तक भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की देश के भीतर खुद इतनी साख थी कि उनको वैधता के लिए दल-बाह्य बौद्धिकों की जरूरत न थी। लेकिन इसी समय यूरोप-अमेरिका के बौद्धिक अपने लेखन में अक्सर प्रतिपादित करते थे कि तीसरी दुनिया में लोकतंत्र का टिकाऊ होना संभव नहीं। इन बौद्धिकों के अनुसार देर-सबेर उसे तानाशाही में रूपांतरित होना ही है। उनके अनुसार इन देशों के सामाजिक संगठन और लोकमानस की बनावट ही ऐसी है। रजनी कोठारी ने अपने लेखन से पूरी दुनिया की बौद्धिक बहसों में भारतीय लोकतंत्र के यथार्थ को प्रस्तुत किया। उस समय हमारे लोकतंत्र पर कई दिशाओं से हमले हो रहे थे। गांधी प्रेरित सर्वोदय आंदोलन राज्यसत्ता को सीधे प्रभावित करने के एजेंडे को तिलांजलि दे चुका था। राममनोहर लोहिया, आचार्य कृपलानी और दीनदयाल उपाध्याय मिलकर गैर-कांग्रेसवाद का प्रतिपादन कर रहे थे।

कम्युनिस्ट चीन और रूस के प्रति अपने फर्क नजरिए के कारण दो खेमों में बंट गए थे। साथ ही, लोकतंत्र के प्रति अपने वैचारिक नजरिए के कारण उस पर हो रहे हमलों का मुकाबला करना उनकी विचारधारा के चौखटे में सहज संभव नहीं था। कम्युनिस्टों द्वारा क्रांतिकरण की कोशिशें शास्त्र प्रेरित थीं न कि तत्कालीन भारतीय यथार्थ के वस्तुनिष्ठ विश्लेषण पर आधारित। हमारे लोकतंत्र विमर्श में मुख्य दलों में अभी इस प्रकार की सहमति और संस्कृति नहीं बनी है कि दलों के बीच सत्ता की प्रतिस्पर्द्धी बहसों के बावजूद लोकतंत्र के बुनियादी मूल्यों पर आंच न आए। मौजूदा लोकतंत्र में यह अंतर्निहित है कि मुख्यधारा के दल एक दूसरे की वैधता पर प्रश्न-चिह्न लगाते ही हैं।

ऐसे में लोकतंत्र संवर्द्धन का दर्शन साफ तौर से प्रतिपादित करने वाला कोई राजनीतिक समूह न था। जबकि यह समय की मांग थी कि कोई राजनीतिक जमात जो सत्ता प्रतिष्ठान का अंग-उपांग न होने के बावजूद लोकतंत्र पर हो रहे वैचारिक हमलों में कांग्रेस का साथ दे। अशोक मेहता की समाजवादी आंदोलन से यही अपेक्षा थी, जो पूरी न होने पर वह खुद कांग्रेस में शामिल हो गए। ऐसे में, रजनी कोठारी ने यह काम अपनी टीम के साथ अपनी बौद्धिक स्वायत्तता बचाते हुए बखूबी किया।

74 में जेपी आंदोलन-संपूर्ण क्रांति आंदोलन की शुरुआत हुई और रजनी कोठारी इस आंदोलन के पक्ष में खुल कर खड़े हो गए। आपातकाल की घोषणा के बाद उनको भारत छोड़कर अमेरिका जाना पड़ा। वहां भी उन्होंने आपातकाल के विरोध में अलख जगा कर रखी।

थे; जो स्थापित करना चाहते थे कि भारत में लोकतंत्र फल-फूल नहीं सकता। विकासशील समाज अध्ययन केंद्र यानी सीएसडीएस में इस बौद्धिक विमर्श की चौपाल हर रोज दोपहरी के समय लगती थी। जिसमें देश और दुनिया के समाजशास्त्री शामिल होते थे, खुल कर चर्चा करते थे।

पक्के तौर पर नहीं कह सकता कि औपचारिक लेखों और दस्तावेजों से यह बात उभर कर आती है या नहीं, कोठारीजी स्वयं दोपहरी भोजन की इस खुली बहस को बहुत

महत्त्वपूर्ण मानते थे। वे अपनी बात की समग्रता, सुघढ़ता और पैनेपन में इन चर्चाओं के योगदान को निर्णायक मानते थे। हर बड़े व्यक्ति की भांति जो हमसफर जैसा है, उसे उसी रूप में स्वीकार करते थे। उनके स्नेह, कृपा और लगभग 'चुपचाप' मार्गदर्शन से उनके इर्दगिर्द

रही थी।

छठे दशक के मध्य से 75 तक इस समूह ने अपनी अच्छी खासी पहचान बना ली थी। 73 के अंत आते-आते देश में कांग्रेस से व्यापक पैमाने पर मोहभंग की स्थिति पैदा हो रही थी। 74 में जेपी आंदोलन-संपूर्ण क्रांति आंदोलन की शुरुआत हुई और रजनी कोठारी इस आंदोलन के पक्ष में खुल कर खड़े हो गए। आपात काल की घोषणा के बाद उनको भारत छोड़कर अमेरिका जाना पड़ा। वहां भी उन्होंने आपात काल के विरोध में अलख जगा कर रखी।

सतहत्तर के चुनाव में जनता पार्टी बनी और जीती। कोठारीजी उसके बौद्धिक मित्र मंडली के अहम सदस्य थे। जल्द ही उन्हें भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद का अध्यक्ष बनाया गया। वहां उन्होंने युवा समाज वैज्ञानिक हर्ष सेठी के माध्यम से देश के परिवर्तनवादी संगठनों और आंदोलनों के महत्त्वपूर्ण अध्ययन कराए।

1980 में धीरू भाई शेठ ने रामाश्रय राय और आशीष नंदी वगैरह से विचार-विमर्श कर लोकतंत्र, विकास और विकेंद्रीकरण पर एक संवाद शृंखला प्रारंभ की। इसमें धीरू भाई शेठ के पुरजोर आग्रह पर कोठारीजी शामिल हुए। जल्द ही यह प्रकल्प 'लोकायन' के नाम से जाना गया। जनवरी 80 से दिसंबर 83 तक यह सीएसडीएस के हिस्से के बतौर और उसके बाद यह स्वतंत्र पंजीकृत संस्था के रूप में चला। देश के विभिन्न क्रांतिकारी, परिवर्तनकारी और लोकतंत्रवादी बौद्धिकों, मीडियाकर्मियों, साहित्यकारों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इसे अपनी चौपाल माना। इस दौरान शेठजी, जो इसके अंगद के पांव थे और रजनी कोठारी, इसके मुख्य चेहरे बन कर उभरे। यहां तक कि 1985 में जब इसे 'राइट-लाइवलीहुड' पुरस्कार मिला तो उसे स्वीकार करने रजनी कोठारी गए। धीरू भाई शेठ, जो कि इसके सहज अधिकारी थे, खुद न जाकर, शायद युवा कार्यकर्ता पीढ़ी के प्रतिनिधित्व के तौर पर, मुझे पुरस्कार प्राप्त करने वाली टीम का हिस्सा बना कर भेजा।

लोकायन में अपनी शिरकत के माध्यम से कोठारीजी के राजनीतिक सरोकार गहरे और मुखर होते गए। वह तरह-तरह के आंदोलन समूहों के मुख्य सलाहकार और बहुत बाद में प्रत्यक्ष भागीदार बने। इस दौरान नागरिक अधिकार आंदोलन, आदिवासी और दलित अस्मिताओं के संघर्ष, समाजवादियों और मार्क्सवादी-लेनिनवादी समूहों के वैचारिक मंथन, पर्यावरण और विकास की बहसें हों या मूल्यों, सपनों और नीतिगत सवालों का अंतसंबंध, कोई प्रश्न ऐसा नहीं था, जिसमें रजनी कोठारी पूरी सक्रियता से हिस्सा न लेते हों।

इन सवालों से जुड़े अनेक संगठन और मंच उन्हें अपना आदमी मानते थे। जनता पार्टी और फिर जनता दल के दौरान वह लोकतंत्र के संवर्द्धन और क्रांतिकरण की

फ्रॉयडवादी होने के साथ-साथ समाज विज्ञान, खास तौर पर, संस्कृति और सामाजिक मनोविज्ञान के विमर्श में औपनिवेशिक चेतना को चुनौती देने के कारण विश्व प्रसिद्ध हुए आशीष नंदी और गांव-देहात में प्रारंभिक शिक्षा पाने वाले ठेठ देशज मुहावरे में सोचने वाले, इंडियन नहीं, भारतीय धीरू भाई शेठ, मिथिला संस्कृति से भली-भांति वाकिफ और भारत की शास्त्रीय परंपराओं के तिरस्कार या हीनभाव से मुक्त रामाश्रय राय उस टीम का हिस्सा थे, जो देश और दुनिया के उस बौद्धिक विमर्श को चुनौती दे रहे

को गढ़ने का भरपूर मौका मिलता था। बौद्धिक प्रतिस्पर्द्धा, ईर्ष्या और विचार-चोरी बौद्धिक जगत की सर्वव्याप्त बीमारियां हैं। रजनी कोठारी नीत यह समूह उनको अपना स्वाभाविक नेता मानता था। साथ ही यह सभी स्वाभिमानी भारतीय के नाते, दुनिया भर के बौद्धिक जगत में अपनी स्वायत्त और काल-स्थान आबद्ध पहचान के साथ लेकिन कालातीत और जागतिक विमर्श का हिस्सा थे। यह टीम पश्चिम के अज्ञान भरे अहंकार से भिड़ रही थी और औपनिवेशिक हीन भाव मुक्त देशज पहचान स्थापित कर

रामकृष्ण हेगडे, वीपी सिंह वगैरह के नजदीक तो थे ही। सुरेंद्र मोहनजी के तो लगभग रोजमर्रा के साथी थे कोठारी साहब। दोनों के बीच यह संवाद कोठारीजी की अस्वस्थता के दिनों में भी बना रहा। रजनी कोठारी के जाने से नेहरू-जेपी, एमएन राय धारा की परंपरा में एक अर्द्धविराम लग गया है। देखना है आने वाली पीढ़ियां किस प्रकार की निरंतरता और धाराबाहिकता बना कर रखेंगी। ❑

networkscommunication@gmail.com